प्रादर्श प्रश्न पत्र 2011

विषय – अर्थशास्त्र (Economic)
कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे | पूर्णांक– 100
Time- 3 Hours | **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।

iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक

iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

v. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।

vi. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।

vii. प्रश्न क्रमांक 20 तथा 21 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.

ii. Please the instructions carefully before writing the answer.

iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.

iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 21.

v. Q. No. 6 to 12 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.

vi. Q. No. 13 to 19 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.

vii. Q. No. 20 and 21 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए –

(अ) पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में उत्पाद की मांग –

(i) पूर्ण लोचदार होती है (ii) पूर्ण बेलोचदार होती है

(iii) इकाई के बराबर लोचदार होती है (iv) कम लोचदार होती है

(ब) राष्ट्रीय आय की आय गणना पद्धति में निम्न घटक की गणना होती है–

(i) निजी उपभोग व्यय (ii) मजदूरी

(iii) कृषि उत्पादन (iv) सरकार द्वारा उत्पादित वस्तुएं

(स) राष्ट्रीय सम्पत्ति का अंग नहीं है –

(i) स्थिर पूंजी (ii) मानव शक्ति

(iii) उपकरण (iv) प्राकृतिक संसाधन

(द) भारत का केन्द्रीय बैंक है –

(i) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (ii) बैंक ऑफ इंडिया

(iii) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (iv) यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया

(इ) अप्रत्यक्ष कर का गुण है –

(i) सुविधाजनक (ii) निश्चित

(iii) मितव्ययी (iv) लोचदार

Choose the correct answer in the following.

(a) In a perfect competition market the demand for product is -

(i) Completely elastic (ii) Completely inelastic

(iii) Elastic equal to unit (iv) Less elastic

(b) In calculation of National factor is taken into account -

(i) Self consumption expenditure (ii) Wages

(iii) Agriculture product (iv) Goods produced by government

(c) Which component is not include in National wealth -

(i) Fixed capital (ii) Human power

(iii) Tools (iv) Natural Resources

(d) The Central Bank of India is -

(i) The State Bank of India (ii) The Bank of India

(iii) The Reserve Bank of India (iv) The United Bank of India

(e) Merit of Indirect Tax is -

(i) Convenient (ii) Certainty

(iii) Economical (iv) Elasticity

प्रश्न 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(i) व्यष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य अंग...................है।

(ii) किसी वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूर्ति में.................हो जाती है।

(iii) अति अल्पकालीन मूल्य को.................मूल्य भी कहा जाता है।

(iv) मुद्रा वह धुरी है जिसके....................अर्थविज्ञान केन्द्रित है।

(v) व्यापार का उद्देश्य...............कमाना होता है, फिर चाहे वह राष्ट्रीय हो या अन्तर्राष्ट्रीय।

Fill in the blanks.

(i) The main mechanism of Micro Economics is.................

(ii) When price of any commodity increases than supply will be.............

(iii) Very short period price is also called.................

(iv) Money is the pivot ....which the economic science clusters.

(v) The aim is trade is earn ....whether it is National or International.

प्रश्न 3. सत्य / असत्य बताइये –

(i) रोजगार के सिद्धांत का प्रतिपादन सर्वप्रथम मार्शल ने किया था।

(ii) रिजर्व बैंक 'बैंकों का बैंक' है।

(iii) मुद्रा संकुचन एक ऐसी अवस्था है जिसमें कीमतें बढ़ती है।

(iv) भारत में 2003 में सेवा कर लागू किया गया।

(v) सूचकांक आर्थिक बैरोमीटर कहलाते है।

Write True or False.

(i) At the first time employment theory is given by Marshall.

(ii) Reserve Bank is also called "Bank of Banks".

(iii) Money defilation is a stage in which price rises.

(iv) Service tax in India come in force from 2003.

(v) Index numbers are called economics barometer.

प्रश्न 3. स्तंभ 'अ' के लिए स्तंभ 'ब' से चुनकर सही जोड़ियां मिलाइये–

	खंड अ	–	खंड ब
(अ)	उत्पादन विधि को कहा जाता है	–	लोकसभा
(ब)	आंतरिक व्यापार	–	विदेशी व्यापार
(स)	राशिपातन	–	एक देश की सीमा के अंदर
(द)	भारत में बजट की स्वीकृति	–	आर्थिक विकास
(इ)	बजट का उद्देश्य	–	मूल्य वृद्धि विधि
		–	राष्ट्रीय व्यापार
		–	मासिक बजट

Make the correct pair for column 'A' choosing from column 'B'.

	A	-	B
(a)	Production method is known as	-	Lok Sabha
(b)	Internal Trade	-	International Trade
(c)	Dumping	-	In the boundary of country
(d)	Permission of budget in India	-	Economic Development
(e)	Objective of Budget	-	Value added method
		-	National trade.
		-	Monthly budget.

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. एक अच्छी कर प्रणाली की एक विशेषता कौन सी है?
2. निर्देशांक किस प्रकार माप है?
3. माध्य विचलन का सूत्र बताइये?

4. प्रमाप विचलन का विचार किसने दिया?

5. श्रेणी सबसे बड़े पद मूल्य तथा सबसे छोटे पद मूल्य के अंतर को कहते है।

Write the Answer of the following questions in a sentence.

1. Which is the one characteristic of a good tax system?
2. What kind of measurement is index number?
3. Write formula of mean deviation?
4. Who gave the thought of standard deviation?
5. Deference between upper item value and lower value of a series is called?

प्रश्न 6. व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में चार अन्तर लिखिए?

Write four differences between micro and macro economics.

अथवा

Or

समष्टि अर्थशास्त्र की चार विशेषताएं लिखिए।

Write four characteristics of macro economics.

प्रश्न 7. मांग के नियम की चार मान्यताएं लिखिए?

Write four assumption of the law of demand.

अथवा

Or

पूर्ति के नियम के अपवादों को समझाइये (कोई चार)

Explain four exceptions of the law of supply.

प्रश्न 8. पूर्ण प्रतियोगी बाजार एवं अपूर्ण प्रतियोगी बाजार में चार अंतर स्पष्ट कीजिए।

State four differences between perfect competition and imperfect competition.

अथवा

Or

एकाधिकार तथा एकाधिकृत प्रतियोगिता में अंतर लिखिए?

Distinguish between monopoly and monopolistic competition.

प्रश्न 9. उपभोग फलन का क्या महत्व है? कोई चार बिन्दु लिखिए?

Write importance of consumption function in any four points.

अथवा

Or

पूर्ण रोजगार को बढ़ाने के लिये कोई चार उपाय लिखिए?

Write four measures to obtain full employment.

प्रश्न 10. व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन में अंतर लिखिए। (कोई चार)

Give four differences between Balance of trade and Balance of payment.

अथवा

Or

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की हानियां लिखिए? (कोई चार)

Write four demerits of International trade.

प्रश्न 11. प्रत्यक्ष कर के गुण लिखिए? (कोई चार)

Write four merits of direct taxes.

अथवा

Or

अप्रत्यक्षकर के दोष लिखिए? (कोई चार)

Write four demerits of indirect taxes.

प्रश्न 12. माध्य विचलन के गुण लिखिए? (कोई चार)

Write any four merits of mean deviation.

अथवा

Or

आधार वर्ष की विशेषताएं लिखिए? (कोई चार)

Write any four characteristics of base year.

प्रश्न 13. सूचकांक बनाने की प्रमुख कठिनाईयां कौन–कौन सी है?

Mention difficulties of constructing Index Numbers.

अथवा

Or

निर्देशांक की सीमाएं लिखिए? (कोई चार)

Give any four limitations of Index Numbers.

प्रश्न 14. मांग के नियम के अपवादों को किन्ही पांच बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट कीजिए?

Explain any five exceptions of the law of demand.

अथवा

Or

मांग की लोच के महत्व को किन्हीं पांच बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट कीजिए?

Explain the importance of elasticity of demand (any five points.)

प्रश्न 15. भारत में राष्ट्रीय आय के कम होने के कोई पांच कारणों को बताइएं?

Write any five reasons responsible for the deficiency in National Income of India.

अथवा

Or

भारत में राष्ट्रीय आय की वृद्धि हेतु कोई पांच आवश्यक सुझाव दीजिए?

Suggest five measure to increase the National Income in India.

प्रश्न 16. कीन्स के रोजगार के सामान्य सिद्धांत की विशेषताएं किन्हीं पांच बिन्दुओं में लिखिए।

Write any five characteristics of the Theory of Employment of Keynes.

अथवा

Or

प्रो. कीन्स द्वारा रोजगार के परम्परावादी सिद्धांत की कोई पांच आलोचनाएं बताइएं?

Give six Criticism of the classical theory of Employment by Pro. Keynes.

प्रश्न 17. ''बजट सरकार के वित्तीय प्रशासन का केन्द्र बिन्दु है'' इस आधार पर बजट के कोई पांच उद्देश्य लिखिए।

"Budget is the centre point of the financial administration" write five objectives according to this sentence.

अथवा

Or

सरकार के घाटे के बजट का देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाला प्रभाव किन्हीं पांच बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

Explain any five effects of the deficit budget on the economy.

प्रश्न 18. ''निर्देशांक आर्थिक बैरोजगारी होते है।'' इस कथन के संबंध में निर्देशांकों का महत्व किन्हीं पांच बिन्दुओं द्वारा बताइए?

"Index Numbers are just like on economic barometer" State five importance of Index Number.

अथवा

Or

अपकिरण के उद्देश्य लिखिए (कोई पांच)

Write five objectives of Dispersion.

प्रश्न 19. मांग को प्रभावित करने वाले प्रमुख छः तत्वों का वर्णन कीजिए।

Describe any six factors that affect the demand.

अथवा

Or

वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले छः तत्वों का वर्णन कीजिए।

Describe any six factors affecting supply.

प्रश्न 20. एक अच्छी मुद्रा पदार्थ के आवश्यक छः गुणों का वर्णन कीजिए?

Give six merits of a Good Money Material?

अथवा

Or

रिजर्व बैंक के कार्य लिखिए? (कोई छः)

Elaborate the functions of the Reserve Bank of India? (Any six points)

प्रश्न 21. निम्नलिखित आकड़ों से फिशर का आदर्श निर्देशांक ज्ञात कीजिये–

वस्तुएं	वर्ष 2010		वर्ष 2011	
	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा
A	4	5	2	2
B	6	10	18	2
C	8	50	20	40

Find out Index Number using fisher's ideal Index Number for the following data -

Commodity	Year 2010		Year 2011	
	Price	Qty.	Price	Qty.
A	4	5	2	2
B	6	10	18	2
C	8	50	20	40

अथवा

Or

कक्षा के 10 छात्रों के A तथा B विषयों में प्राप्तांकों की श्रेणियां दी गई है, स्पियरमैन के सूत्र द्वारा श्रेणी अंतर सहसंबंध गुणांक ज्ञात कीजिए?

विषय A - 5, 2, 9, 7, 1, 6, 4, 10, 8, 3

विषय B - 4, 1, 7, 8, 2, 5, 6, 10, 3, 9

Find out coefficient of correlation of the following data by Rank difference method -

Subject A - 5, 2, 9, 7, 1, 6, 4, 10, 8, 3

Subject B - 4, 1, 7, 8, 2, 5, 6, 10, 3, 9

— — — — — —

आदर्श उत्तर

विषय – अर्थशास्त्र (Economic)
कक्षा – बारहवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

उत्तर 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए –

(अ) पूर्ण लोचदार होती है।

(ब) मजदूरी।

(स) उपकरण।

(द) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया।

(इ) सुविधाजन।

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(i) कीमत सिद्धांत।

(ii) वृद्धि।

(iii) बाजार।

(iv) चारो ओर।

(v) लाभ।

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 3. सत्य/असत्य बताइए –

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 4. सही जोडियां –

	खंड अ	–	**खंड ब**
(अ)	उत्पादन विधि को कहा जाता है	–	मूल्य वृद्धि विधि
(ब)	आंतरिक व्यापार	–	एक देश की सीमा के अंदर
(स)	राशिपातन	–	विदेशी व्यापार
(द)	भारत में बजट की स्वीकृति	–	लोकसभा
(इ)	बजट का उद्देश्य	–	आर्थिक विकास

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. एक अच्छी कर प्रणाली की एक विशेषता करारोपण के विभिन्न सिद्धांतों के अनुकूल है।
2. निर्देशांक सापेक्ष प्रकार माप है।

3- माध्य विचलन का सूत्र – $\left[\delta x = \frac{\sum |dx|}{N}\right]$

4.

5. प्रमाप विचलन का विचार कार्ल पियर्सन ने दिया।
6. श्रेणी सबसे बड़े पद मूल्य तथा सबसे छोटे पद मूल्य के अंतर को विस्तार कहते है।

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक इस प्रकार कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 6. व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र में चार अंतर

क्र.	अंतर का आधार	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1.	विषय सामग्री	व्यष्टि अर्थशास्त्र में वैयक्तिक आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता हैं	समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण अर्थव्यस्था का अध्ययन किया जाता है।
2.	तेजी और मंदी	व्यष्टि अर्थशास्त्र में वैयक्तिक इकाईयों की तेजीव मंदी की विवेचना की जाती है।	समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण आर्थिक मंदी तथा तेजी के का अवसावें स्पष्टीकरण किया जाता है।
3.	सीमा	व्यष्टि का क्षेत्र सीमान्त विश्लेषण आदि पर आधारित नियमों तक सीमित है।	समष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र राष्ट्रीय आय, पूर्ण रोजगार, राजस्व आदि संपूर्ण अर्थ व्यवस्था से संबंधित समस्याओं का विश्लेषण करता है।
4.	विश्लेषण	व्यष्टि अर्थशास्त्र कीमत विश्लेषण से संबंध रखता है	समष्टि अर्थशास्त्र का लक्ष्य आय का विश्लेषण करना है।

(प्रत्येक सही अन्तर पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

समष्टि अर्थशास्त्र की चार विशेषताएं निम्नलिखित है

(1) विस्तृत दृष्टिकोण

(2) सामूहिक हितों पर बल

(3) परस्पर निर्भरता

(4) आय व रोजगार सिद्धांत

(1) विस्तृत दृष्टिकोण :– समष्टि अर्थशास्त्र की धारण विस्तृत है इसमें छोटी–छोटी इकाईयों को महत्व नहीं दिया जाता बल्कि इसकी सहायता से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का हल निकाला जाता है। इस प्रकार यह प्रावैगिक अर्थव्यवस्था के महत्व को स्वीकार करता है।

(2) सामूहिक हितों पर बल :– समष्टि अर्थशास्त्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता हैं सामूहिक हितों पर सर्वाधकि बल देना, यह व्यक्तिगत हितों की तुलना में सामूहिक हितों पर ध्यान देता है।

(3) परस्पर निर्भरता :– समष्टि अर्थशास्त्र में समूह का अध्ययन किया जाता है, इसमें इतनी अधिक इकाईया होती है जो परस्पर जुड़ी होती है, एक दूसरे से संबंधित होती हैं। एक इकाई में परिवर्तन करने पर अन्य मात्राओं के संतुलन स्तर में भी परिवर्तन हो जाता हैं।

(4) आय व रोजगार सिद्धांत :– समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय तथा कुल रोजगार का अध्ययन केन्द्रीय स्थान रखता हैं, इसलिये इसे आय व रोजगार का सिद्धांत भी कहते हैं

(सही बिन्दु लिखे जाने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 7. मांग के नियम की मान्यताएं निम्नलिखित है :–

1. उपभोक्ता की आय में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
2. उपभोक्ता की रूचि तथा फैशन में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
3. भविष्य में कीमत वृद्धि की कोई संभावना नहीं होना चाहिए।
4. जनसंख्या में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

प्रत्येक सही मान्यताएं लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक

अथवा

पूर्ति के नियम के प्रमुख अपवाद निम्नलिखित है :–

1. **कृषि वस्तुओं पर लागू न होना :–** कृषि वस्तुओं की पूर्ति प्रकृति पर निर्भर करती है। अतः कृषि वस्तुओं की पूर्ति को इनकी कीमतें बढ़ने पर नहीं बढ़ाया जा सकता।
2. **भविष्य में कीमतों में अधिक कमी या वृद्धि की संभावना होने पर नियम का लागू न होना :–** जिन वस्तुओं के बारे में भविष्य में कीमत परिवर्तन का अनुमान लगा लिया जाता है, उन पर पूर्ति का नियम लागू नहीं होता।
3. **नीलाम की वस्तुओं पर भी यह नियम लागू नहीं होता है :–** जिन वस्तुओं की नीलामी की जाती है उन पर भी यह नियम लागू नहीं होता क्योंकि कीमतों के घटने–बढ़ने का प्रभाव वस्तुओं की पूर्ति पर नहीं पड़ता।
4. **कलात्मक वस्तुओं के संबंध में यह नियम लागू नहीं होता है :–** कलात्मक वस्तुओं पर भी यह नियम लागू नहीं होता क्योंकि उनकी कीमत बढ़ने पर उनकी पूर्ति नहीं बढ़ायी जा सकती।

उपरोक्तानुसार बिन्दु लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. पूर्ण प्रतियोगिता तथा अपूर्ण प्रतियोगिता में अन्तर –

क्र.	पूर्ण प्रतियोगिता	अपूर्ण प्रतियोगिता
1	इसमें क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है।	इसमें क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है।
2	इसमें एक समान वस्तु का उत्पादन किया जाता है।	इसमें विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।
3	इसमें फर्मे मूल्य निर्धारक न होकर मूल्य स्वीकार करने वाली होती हैं।	इसमें फर्मे मूल्य को निर्धारित करती है।
4	यह बाजार की काल्पनिक स्थिति है।	यह बाजार की व्यावहारिक स्थिति है।

(प्रत्येक सही अंतर लिखने पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

अथवा

एकाधिकार तथा एकाधिकृत प्रतियोगिता में अन्तर :–

क्र.	एकाधिकार	एकाधिकृत
1	इसमें केवल एक फर्म होती है।	इसमें अनेक फर्म होती है।
2	इसमें एक समान वस्तु का उत्पादन किया जाता है।	इसमें विभेदीकृत वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।
3	इसमें कीमत विभेद संभव है।	इसमें कीमत विभेद का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
4	इसमें नई फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबंध रहता है।	इसमें नई फर्मों को उद्योग में प्रवेश करने की स्वतंत्रता होती है।

(प्रत्येक सही अंतर लिखने पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

उत्तर 9. उपभोग फलन के महत्व निम्नलिखित है :–

1. **'से' के नियम को गलत सिद्ध करना :–** उपभोग फलन का विचार 'से' के इस नियम का खण्डन करता है कि पूर्ति स्वयं मांग उत्पन्न करती है। इसलिए अर्थव्यवस्था में अति उत्पादन तथा बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न नहीं होती है। उपभोग फलन के विचार के अनुसार समस्त आय उपभोग पर व्यय न करके उसमें से कुछ बचा ली जाती है।
2. **विनियम का महत्व :–** उपभोग फलन बताता है कि बचत अन्तराल के कारण बेरोजगार का स्तर गिरता है, जिसे विनियोग में वृद्धि करके पूरा किया जा सकता है।
3. **अपूर्ण रोजगार साम्य की संख्या :–** उपभोक्ता अपनी समस्त आय को व्यय नहीं करते है। जिससे प्रभावपूर्ण मांग में कमी रह जाती है तथा पूर्ा रोजगार साम्य न होकर अपूर्ण रोजगार साम्य स्थापित हो जाता है।

4. **स्थायी जड़ता का स्पष्टीकरण :–** उपभोग फलन का विचार बताता है कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में आय व उपभोग का अन्तर विकास के साथ बढ़ता है। बचतों के बढ़ने तथा विनियोग में यह कमी स्थायी जड़ता कहलाती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

पूर्ण रोजगार को बढ़ाने के उपाय निम्नलिखित है :–

1. जनसंख्या को नियंत्रित कर मानव शक्ति का उचित नियोजन किया जाना चाहिए।
2. लघु व कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देकर उनका समुचित विकास किया जाना चाहिए।
3. कृषि व्यवसाय का विकास किया जायें।
4. पूंजी निर्माण तथा आर्थिक विकास में वृद्धि के उपाय किये जावें।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 10. **भुगतान संतुलन तथा व्यापार संतुलन में अंतर –**

	व्यापार संतुलन	**भुगतान संतुलन**
1	व्यापार संतुलन में आयात निर्यात की जाने वाली दृश्य मदो को ही शामिल किया जाता है।	भुगतान संतुलन में दृश्य मदों के साथ–साथ अदृश्य मदों को भी शामिल किया जाता है।
2	व्यापार संतुलन, भुगतान संतुलन का एक भाग है।	भुगतान संतुलन की धारणा अधिक व्यापक होती है।
3	किसी देश का व्यापार संतुलन पक्ष में न होना कोई अधिक चिन्ता का विषय नहीं है।	यदि भुगतान संतुलन प्रतिकूल है तो यह चिन्ता का विषय है।
4	व्यापार संतुलन अनुकूल या प्रतिकूल हो सकता है।	भुगतान सुंलन सदा ही संतुलित रहता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रमुख हानियां निम्नांकित है :–

1. **घरेलू उद्योगों को हानि** :– अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण विदेशों से स्वतंत्रतापूर्वक माल का आयात होता है जिसके कारण आयातक देश के उद्योगों को भयंकर प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। परिणामस्वरूप इन उद्योगों का विकास रूक जाता है।
2. **विदेशों पर निर्भरता** :– अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था को एक–दूसरे पर निर्भर कर देता है। यह निर्भरता सदैव ही अच्छी नहीं रहती, क्योंकि किसी एक देश में आने वाले संकट का प्रभाव विश्व भर में फैल जाता है।
3. **राशिपातन का भय** :– प्रायः विदेशी बाजार पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए कुछ देश प्रारंभ में बहुत कम मूल्यों पर वस्तुएं बेचते है और जब देशी उद्योग बंद हो जाते है तब वे मनचाहा मूल्य वसूल करके जनता का शोषण करने लगते है। इस नीति को राशिपातन की नीति कहते है।
4. **हानिकारक वस्तुओं के उपभोग को प्रोत्साहन** :– कभी–कभी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार देश में हानिकारक वस्तुओं के उपभोग को भी प्रोत्साहित करता है, जिसका देशवासियों के स्वास्थ्य एवं जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

उत्तर 11. प्रत्यक्ष कर के प्रमुख गुण निम्नलिखित है :–

1. **उत्पादकता** :– प्रत्यक्ष करों में उत्पादकता का गुण पाया जाता है, क्योंकि जैसे–जैसे सम्पत्ति बढ़ती जाती है वैसे–वैसे करों से होने वाली आय भी बढ़ती जाती है।
2. **मितव्ययिता** :– प्रत्यक्ष करों का संग्रह, व्यय की अपेक्षा करों से प्राप्त होने वाली आय अधिक होती है। इसलिए इन करों में न्यायशीलता, निश्चितता, प्रगतिशीलता व उत्पादकता के गुण पाये जाते है।

3. **लोचकता** :– प्रत्यक्ष करों की दर को संकटकालीन स्थिति में बढ़ाया जा सकता है, और सामान्य स्थिति में करों को कम किया जा सकता है।
4. **निश्चितता** :– प्रत्यक्ष करों में कर दाता को इस बात की निश्चितता रहती है कि उसे कर के रूप में कितनी राशि चुकानी है। राज्य को भी निश्चितता रहती है कि प्रत्यक्ष करों से उसे कितनी आय प्राप्त होगी।

(प्रत्येक सही गुण लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

अप्रत्यक्ष कर के प्रमुख दोष निम्नलिखित है :–

1. **कर की चोरी :–** अप्रत्यक्ष करों की चोरी की संभावना अधिक रहती है, जिससे समाज में भ्रष्टाचार तथा बेईमानी को बढ़ावा मिलता है और अधिकारी वर्ग भी अपना नैतिक उत्थान नहीं कर पाते।
2. **असमानता** :– अप्रत्यक्ष कर बिना किसी प्रकार का अन्तर किये सभी प्रकार के लोगों पर लगाये जाते है, अतः ये अन्यायपूर्ण एवं असमानतापूर्ण माने जाते हे।
3. **बेलोचदार** :– अप्रत्यक्ष करों में लोचकता का अभाव रहता है, क्योंकि ऐसी वस्तुओं की मांग बेलोचदार होती है।
4. **प्रतिगामी** :– अप्रत्यक्ष कर प्रतिगामी भी होते है, क्योंकि इनका अत्यधिक भार गरीबों पर पड़ता है।

(प्रत्येक सही दोष लिखने पर 1 अंक, कुल 4 अंक)

उत्तर 12. माध्य विचलन के प्रमुख गुण निम्न है :–

1. माध्य विचलन को समझना व इसकी गणना करना अधिक आसान होता है।
2. माध्य विचलन चरम मूल्यों से अपेक्षाकृत कम प्रभावित होता है।
3. माध्य विचलन की गणना किसी भी माध्य से की जा सकती है।

4. माध्य विचलन का आर्थिक, व्यापारिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में व्यापक प्रयोग होता है।

(प्रत्येक सही गुण लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

आधार वर्ष की विशेषताएं निम्नलिखित है :–

1. आधार वर्ष ऐसा होना चाहिए जिसमें कोई सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व प्राकृतिक असामान्य घटना नहीं घटी हो अर्थात् यह सामान्य वर्ष होना चाहिए।
2. आधार वर्ष वास्तविक हो, काल्पनिक न हो।
3. आधार वर्ष के काल की समस्त सूचनाएं उपलब्ध हो।
4. आधार वर्ष अधिक पुराना भी न हो।

(प्रत्येक सही विशेषताएं लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 13. सूचकांक बनाने की प्रमुख कठिनाईयां निम्नलिखित है :–

1. **आधार वर्ष के चुनाव में कठिनाईयां** :– ऐसे आधार वर्ष का चुनाव करना कठिन होता है। जिस वर्ष कोई असाधारण घटना घटित न हो।
2. **प्रतिनिधि वस्तुओं के चुनाव में कठिनाई** :– ऐसी वस्तुओं का चुनाव करना कठिन हो जाता है जो सभी वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करती है।
3. **मूल्यों के संकलन में कठिनाई** :– थोक मूल्य लिये जाये या फुटकर मूल्य आंकड़े एकत्रित करना मुश्किल कार्य है।
4. **वस्तु के भार में कठिनाई** :– प्रायः सभी वस्तुएं सभी व्यक्तियों के लिये समान महत्व की नहीं होती इसलिए भार भी प्रायः अनुमानित ही होते है।

(प्रत्येक सही कठिनाईयां लिखने पर 1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

निर्देशांक की सीमाएं निम्नलिखित है :–

1. **अनुमानित माप** :– निर्देशांक केवल सापेक्ष परिवर्तनों को ही बतलाता है। वह भी उनका केवल अनुमान मात्र ही होता है।
2. **परिशुद्धता की कमी** :– निर्देशांक से शुद्धता प्राप्त नहीं की जा सकती। यह वस्तुओं की संख्या तथा सही उद्धरणों पर निर्भर करता है।
3. **तुलना कठिन** :– अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक घटनाओं की तुलना करना कठिन है क्योंकि प्रत्येक देश में वस्तुओं के मूल्य मात्रा भिन्न होते है।
4. **उद्‌देश्य में अंतर** :– एक उद्‌देश्य के लिए बनाये गये निर्देशांक दूसरे उद्‌देश्य के लिये अनुपयुक्त होते है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक)

उत्तर 14. जब मांग का नियम क्रियाशील नहीं होता है, उन दशाओं को मांग के नियम के अपवाद कहते है। जो निम्नलिखित है :–

1. **गिफिन का विरोधाभास** :– मांग के नियम के संबंध में सर रॉबर्ट गिफिन ने बताया कि निम्न कोटि की वस्तुओं के संबंध में यह नियम लागू नहीं होता है। निम्न कोटि की वस्तु जिस पर उपभोक्ता अपनी आय का बड़ा भाग व्यय करता है यदि इन वस्तुओं की कीमत कम हो जाती है तो उपभोक्ता उस वस्तु की मांग घटा देते हैं और इससे उसकी आय में जो वृद्धि होती है उसे श्रेष्ठ वस्तु पर खर्च करता है।
2. **भविष्य में मूल्य वृद्धि की आशा** :– जब उपभोक्ता को भविष्य में वस्तुओं की कीमत वृद्धि की आशंका होती है तब भी मांग का नियम लागू नहीं होता है। लोग महंगी कीमत होने पर भी वस्तु अधिक खरीदते है।
3. **प्रतिष्ठा मूलक वस्तुएं** :– यदि मान प्रतिष्ठा और शान शौकत बढ़ाने वाली वस्तुओं जैसे हीरे, जवाहरात, आभूषण आदि की कीमतों में वृद्धि होती है तब

भी मांग का नियम लागू नहीं होता है। लोग समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये इन्हें खरीदते ही है।

4. **अनिवार्य वस्तुएं :–** मांग का नियम उपभोक्ता द्वारा क्रय की जाने वाली अनिवार्य वस्तुओं के संबंध में भी मांग का नियम लागू नहीं होता है। इनकी कीमत बढ़ने पर भी इनकी मांग कम नहीं होती है।
5. **अज्ञानता के कारण :–** कभी–कभी अज्ञानतावश बहुत सी वस्तुओं की कीमतें कम होने पर भी व्यक्ति उनको घटियां समझकर नहीं खरीदते है लेकिन जैसे ही उन वस्तुओं की कीमत बढ़ायी जाती है व्यक्ति उन्हें उपयोगी समझने लगते है और उनकी मांग बढ़ने लगती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

मांग की लोच के महत्व के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित है :–

1. **मूल्य निर्धारण के सिद्धांत में महत्व :–** प्रत्येक उत्पादक को अपनी वस्तु का मूल्य निर्धारित करते समय मांग की लोच पर ध्यान देना पड़ता है। बेलोचदार मांग वाली वस्तु की कीमत अधिक और लोचदार मांग वाली वस्तु की कीमत कम रखी जाती है।
2. **वितरण के सिद्धांत में महत्व :–** मांग की लोच का वितरण के सिद्धांत में भी विशेष महत्व है उत्पादन उन साधनों को अधिक पारिश्रमिक देते है जिनकी मांग बेलोचदार होती है। लेकिन जिन साधनों की मांग अधिक लोचदार होती है, उन्हें अपेक्षाकृत कम पारिश्रमिक दिया जाता है।
3. **सरकार के लिये महत्व :–** सरकार बेलोचदार मांग वाली वस्तुओं पर अधिक कर और लोचदार मांग वाली वस्तुओं पर कम कर लगाती है। दूसरे सरकार बेलोचदार मांग वाले उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र में और लोचदार मांग वाले उद्योगों को निजी क्षेत्र में रखती है।

4. **विदेशी व्यापार में महत्व :–** विदेशी व्यापार के क्षेत्र में भी मांग की लोच के सिद्धांत का महत्व है। निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की मांग की लोच बेलोचदार होने पर देश को वस्तुओं का अधिक मूल्य प्राप्त होगा और आयात की जाने वाली वसतुओं की मांग की लोच लोचदार होने पर देश को वस्तुओं का कम मूल्य देना होगा।

5. **परिवहन उद्योग में महत्व :–** मांग की लोच परिवहन उद्योग में भाड़े की दर निश्चित करने में सहायक होती है। जिन वस्तुओं की परिवहन मांग बेलोचदार होती है उनका किराया अधिक और जिन वस्तुओं की परिवहन मांग लोचदार होती है। उनका किराया कम रखा जाता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 15. भारत में राष्ट्रीय आय कम होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित है :–

1. **जनसंख्या वृद्धि :–** जनसंख्या वृद्धि राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की धीमी गति का सबसे महत्वपूर्ण कारण है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या सरकार के आर्थिक कार्यक्रमों में बाधक है।

2. **कृषि उत्पादन की अनिश्चितता :–** भारत में कृषि मानसून पर निर्भर है, जो हमेशा अनिश्चित रहता है तथा बाढ़, अकाल, फसलों की बीमारियां भी कृषि क्षेत्र की उत्पादकता को कम करती है।

3. **कुशल श्रमिकों का आभाव :–** भारत में कुशल श्रमिकों की कमी के कारण भी उत्पादन उच्च स्तर का नहीं होता है और सरकार की आय कम होने से राष्ट्रीय आय कम हो जाती है।

4. **पिछड़ी तकनीक :–** भारत में कृषि व उद्योग के क्षेत्र की तकनीक पिछड़ी है। जिससे राष्ट्रीय आय की वृद्धि पर कम हो जाती है।

5. **सामाजिक कारण :–** भारत की कुछ सामाजिक प्रथाएं भी (जाति प्रथा एवं संयुक्त परिवार प्रणाली) राष्ट्रीय आय वृद्धि में विपरीत प्रभाव डालती हैं। कुछ लोगों की अशिक्षा व अज्ञानता भी राष्ट्रीय आय वृद्धि में बाधक है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

भारत में राष्ट्रीय आय की वृद्धि हेतु सुझाव निम्नलिखित है :–

1. **प्राकृतिक साधनों का उचित उपयोग :–** देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि के लिए आवश्यक है कि प्राकृतिक साधनों का उचित प्रयोग किया जाये।
2. **जनसंख्या की वृद्धि पर नियंत्रण :–** देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि के लिये यह आवश्यक है कि यथा संभव बढ़ती हुई जनसंख्या दर को कम किया जाए।
3. **बचतों को प्रोत्साहन एवं पूंजी निर्माण :–** घरेलू बचत को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा उन बचतों को पूंजी निर्माण में बदल दिया जाना चाहिए।
4. **कृषि का आधुनिकीकरण :–** कृषि के आधुनिकीकरण से उत्पादन बढ़ेगा। फलतः देश की राष्ट्रीय आय भी बढ़ेगी।
5. **आधारभूत सेवाओं का विस्तार :–** राष्ट्रीय आय में वृद्धि के लिए आधारभूत सेवाओं जैसे– स्वास्थ्य, परिवहन, संचार आदि का विस्तार किया जाना चाहिए।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 16. कीन्स के सामान्य सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है :–

1. **सामान्य सिद्धांत :–** कीन्स का रोजगार सिद्धांत एक सामान्य सिद्धांत है। जो अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों एवं स्थितियों में लागू होता है।
2. **अल्प रोजगार संतुलन की व्याख्या :–** कीन्स ने अपने सिद्धांत में यह स्पष्ट किया है कि पूर्ण रोजगार के पूर्व ही अर्थव्यवस्था में संतुलन की स्थिति प्राप्त की जा सकती है।
3. **आर्थिक समष्टि भाव :–** रोजगार सिद्धांत को प्रतिपादन में कीन्स ने समष्टि भावात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। जैसे– आय, उत्पादन, रोजगार, बचत, विनियोग, उपभोग ये सभी समग्र को व्यक्त करते है।

4. **गुणक सिद्धांत की व्याख्या** :– कीन्स ने गुणक सिद्धांत को नया रूप प्रदान करके विनियोग और आय के बीच के संबंध को बताया है। जिसका रोजगार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
5. **विनियोग का महत्व** :– कीन्स के सिद्धांत में विनियोग का विशेष महत्व है। विनियोग में उतार चढ़ाव के कारण ही रोजगार में भी उतार चढ़ाव होता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

कीन्स द्वारा आय व रोजगार के परम्परावादी सिद्धांत की आलोचनाएं निम्नलिखित आधार पर की गई है :–

1. आय व रोजगार के परम्परावादियों का यह मूलभूत निष्कर्ष ही गलत है कि एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में सदैव पूर्ण रोजगार पर ही संतुलन होता है।
2. प्रो. कीन्स के अनुसार परम्परावादियों का यह तर्क भी गलत है कि मौद्रिक मजदूरी में कमी करके रोजगार बढ़ाया जा सकता है।
3. कीन्स के अनुसार बाजार में मांग एवं पूर्ति का बराबर होना भी जरूरी नहीं है। यह कहना भी गलत है कि पूर्ति अपने आप अपनी मांग का निर्माण कर लेती है।
4. कीन्स के अनुसार बचत एवं विनियोग ब्याज दर द्वारा सही नहीं किया जा सकता है बल्कि आय स्तर द्वारा इसे सही किया जा सकता है।
5. प्रो. कीन्स के अनुसार सन् 1929–32 की आर्थिक मंदी ने भी व्यावहारिक आधार पर भी यह सिद्ध कर दिया है कि इस सिद्धांत के संबंध में परम्परावादियों के निष्कर्ष गलत है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 17. बजट सरकार के वित्तीय प्रशासन का केन्द्र बिन्दु होता है। बजट के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है :—

1. **हिसाब देयता का उद्देश्य** :— एक प्रजातांत्रिक देश में सरकार जनता के प्रति हिसाब देयता के लिये उत्तरदायी है। जनता के प्रतिनिधियों को इस बात को जानने का अधिकार है कि सार्वजनिक धन का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है तथा इससे पूर्व स्वीकृतियों का पालन किया गया या नहीं? बजट के माध्यम से इस उद्देश्य की आपूर्ति संभव हो जाती है।
2. **आर्थिक नियंत्रण :—** बजट के माध्यम से संसद सार्वजनिक कोषों की प्राप्ति और प्रयोग के संबंध में नियंत्रण रखती है तथा इसके लिये उचित नीति का निर्माण करती है। बजट के अभाव में विभिन्न मंत्रालय मनमाने ढंग से कार्य करने लग जायेंगे।
3. **आर्थिक स्थिरता** :— बजट का उद्देश्य आर्थिक स्थिरता बनाये रखना है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की एक विशेषता आर्थिक उच्चावचन का पाया जाना है। इन उच्चावचनों को कम करने में बजट की महत्वपूर्ण भूमिका है।
4. **प्रशासकीय कुशलता** :— बजट में प्रत्येक क्षेत्र एवं विभाग की आवश्यकताओं का अनुमान लगाकर उसके अनुसार व्यय करने की स्वीकृति प्रदान करती है। सार्वजनिक व्यय स्वीकृतियों के अनुसार हो इसका पूरा ध्यान एवं नियंत्रण रखा जाता है।
5. **योजनाओं से संबंधित** :— आर्थिक विकास के संबंध में योजनाओं से संबंधित बजट प्रावधान रखे जाते है। वित्तीय वर्ष में विकास के लक्ष्यों को पूरा करने का प्रावधान होता है तथा उन्हें प्राप्त करने हेतु प्रयत्न किये जाते है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

सरकार के घाटे के बजट का देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव निम्नलिखित है :–

1. घाटे की वित्त व्यवस्था से मुद्रा का चलन वेग बढ़ जाता है। यह वेग केवल नोट छापकर ही नहीं बल्कि बैंकों द्वारा जारी ऋणपत्रों व साख सृजन से भी बढ़ता है।
2. घाटे की वित्त व्यवस्था ने निजी निवेशों को प्रोत्साहित किया तथा नये–नये विनियोगकर्ता भी उत्पादन के क्षेत्र में प्रवेश पाने लगे है, जिससे संपूर्ण मांग में वृद्धि होती है। अतः उत्पादक अधिक उत्पादन के लिये प्रोत्साहित होते है। परिणामस्वरूप रोजगार के नये अवसर उपलब्ध होते है।
3. घाटे की वित्त व्यवस्था का प्रयोग करते समय सरकारी नियंत्रणों का होना आवश्यक है। समुचित सरकारी नियंत्रणों के अभाव में घाटे की वित्त व्यवस्था अनियंत्रित हो जायेगी।
4. घाटे के बजट का आय के वितरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में कीमतें बढ़ती है, जिससे व्यापारी वर्ग को लाभ होता है, जबकि दूसरी ओर श्रमिक व वेतन भोगी वर्ग पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 18. निर्देशांक आर्थिक बैरोजगार के समान होते है जैसे– वायु मापक यंत्रों से वायु के दबाव व मौसम की स्थिति के विषय में अध्ययन किया जाता है उसी प्रकार निर्देशांक से आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जाता है।

1. **जीवन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन :–** निर्देशांकों की सहायता से सामान्य नागरिकों एवं श्रमिकों के जीवन स्तर में हुए परिवर्तनों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

2. **मुद्रा की क्रय शक्ति में परिवर्तन का ज्ञान** :– निर्देशांकों की सहायता से समय–समय पर मुद्रा की क्रय शक्ति में हुए परिवर्तनों को जाना जा सकता है।
3. **व्यापारियों के लिये उपयोगी** :– निर्देशांक व्यापारी तथा उत्पादक वर्गों के लिए भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते है।
4. **विदेशी व्यापार संबंधी ज्ञान** :– निर्देशांकों से विदेशी व्यापार की स्थिति का पता चलता है।
5. **राष्ट्रीय आय में परिवर्तन का ज्ञान** :– निर्देशांक से राष्ट्रीय आय में परिवर्तन का अनुमान लगाया जा सकता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

अथवा

अपकिरण के उद्‌देश्य निम्नलिखित है :–

1. **माध्य से औसत दूरी ज्ञात करना** :– अपकिरण का पहला उद्‌देश्य संमक श्रेणी के माध्य से विभिन्न पद मूल्यों की औसत दूरी ज्ञात करना होता है।
2. **श्रेणी की रचना का ज्ञान** :– अपकिण से श्रेणी की बनावट के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
3. **तुलनात्मक अध्ययन** :– अपकिरण के द्वारा दो या दो से अधिक श्रेणियों के बीच विचरणशीलता की तुलना की जाती है।
4. **एकरूपता ज्ञात करना** :– अपकिरण का अध्ययन समूह में एकरूपता का अध्ययन करने में किया जाता है।
5. **प्रतिनिधित्व** :– अपकिरण द्वारा ज्ञात किया जाता है कि वह किस सीमा तक माध्य का प्रतिनिधित्व करता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक)

उत्तर 19. मांग को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व निम्नलिखित है :–

1. **उपभोक्ता की आय :–** उपभोक्ता की आय मांग को प्रभावित करती है। उपभोक्ता की आय बढ़ने से वस्तु की मांग बढ़ती है। इसके विपरीत उपभोक्ता की आय कम होने से वस्तु की मांग कम हो जाती है।
2. **वस्तु की कीमत :–** किसी वस्तु की मांग को उसकी कीमत भी प्रभावित करती है। प्रायः वस्तु की कीमत घटने पर मांग बढ़ती है तथा वस्तु की कीमत बढ़ने पर मांग घटती है।
3. **धन का वितरण :–** समाज में धन का वितरण भी वस्तुओं की मांग को प्रभावित करता है। यदि समाज में धन का वितरण असमान है तो विलासितापूर्ण वस्तुओं की मांग बढ़ेगी। इसके विपरीत यदि समाज में धन का वितरण समान है तो अनिवार्य एवं आरामदायक वस्तुओं की मांग बढ़ेगी।
4. **उपभोक्ताओं की रूचि :–** उपभोक्ताओं की रूचि फैशन, आदत एवं रीति रिवाज भी वस्तु की मांग को प्रभावित करते है। जिस वस्तु के प्रति उपभोक्ता की रूचि बढ़ती है तो उस वस्तु की मांग भी बढ़ जाती है। इसके विपरीत स्थिति में मांग कम हो जाती है।
5. **मौसम एवं जलवायु :–** वस्तु की मांग पर मौसम एवं जलवायु का भी प्रभाव पड़ता है। गर्मी के दिनों में फ्रिज की मांग एवं ठंड के दिनों में हीटर की मांग बढ़ जाती है।
6. **जनसंख्या :–** देश की जनसंख्या मांग को प्रभावित करती है देश में जनसंख्या तेजी से बढ़ने पर मांग बढ़ती है। यदि जनसंख्या धीमी गति से बढ़ेगी तो वस्तु की मांग कम होगी।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक)

अथवा

वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व निम्नलिखित है :–

1. **वस्तु की कीमत** :— पूर्ति पर वस्तु की कीमत का प्रभाव पड़ता है। जब किसी वस्तु की कीमत कम होती है तो वस्तु की पूर्ति घट जाती है। इसके विपरीत वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो उस वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है।
2. **उत्पादन के साधनों की कीमते** :— यदि उत्पादन के साधनों की कीमत बढ़ जाती है तो पूर्ति में कमी आ जाती है। इसके विपरीत उत्पादन के साधनों की कीमते कम हो जाती है तो पूर्ति में वृद्धि हो जाती है।
3. **स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्य** :— पूर्ति पर स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्यों का भी प्रभाव पड़ता है। स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्य बढ़ जाने पर वस्तु की पूर्ति घट जाती है तथा स्थानापन्न वस्तुओं के मूल्य घटने पर वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है।
4. **प्राकृतिक तत्व** :— पूर्ति पर प्राकृतिक तत्वों का भी प्रभाव पड़ता है। यदि प्राकृतिक तत्व उत्पादन की दृष्टि से अनुकूल है तो पूर्ति बढ़ जाती है। यदि प्राकृतिक तत्व उत्पादन की दृष्टि से प्रतिकूल हो तो पूर्ति घट जायेगी।
5. **तकनीकी ज्ञान** :— तकनीकी ज्ञान में वृद्धि होने से वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है। इसके विपरीत तकनीकी ज्ञान में कमी होने से वस्तु की पूर्ति घट जाती है।
6. **कर नीति** :— वस्तु की पूर्ति पर सरकार की कर नीति का भी प्रभाव पड़ता है। सरकार द्वारा ऊंची दर से कर लगाने पर पूर्ति घटती है, नीची दर से कर लगाने पर पूर्ति बढ़ती है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक)

उत्तर 20. एक अच्छी मुद्रा पदार्थ के आवश्यक गुण निम्नलिखित है :—

1. **सुपरिचयता** :— एक अच्छे मुद्रा पदार्थ के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उसकी पहचान जन साधारण आसानी से कर सके। यदि ऐसा नहीं होगा तो जाली मुद्रा का भय सदैव बना रहता है।

2. **सामान्य स्वीकृति** :– मुद्रा ऐसे पदार्थ की बनी होनी चाहिए जिसे सभी लोग सहर्ष स्वीकार कर ले इस प्रकार मुद्रा को सामान्य स्वीकृति का गुण प्राप्त होना चाहिए।
3. **वहनीयता** :– एक अच्छे मुद्रा पदार्थ के लिये यह आवश्यक है कि उसमें वहनीयता अर्थात एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से लाया एवं ले जाया जा सकें।
4. **विभाज्यता** :– मुद्रा विभाजनीय होनी चाहिए। जैसे– भारत में एक रूपये का नोट 50 पैसे, 25 पैसे, 10 पैसे, 5 पैसे में विभाजनीय है।
5. **टिकाऊपन** :– मुद्रा पदार्थ टिकाऊ होना चाहिए अर्थात एक बार जिस मुद्रा का निर्गमन किया जाये उसका वर्षों तक प्रयोग किया जाना चाहिए।
6. **मूल्य स्थायित्व** :– एक अच्छे मुद्रा पदार्थ के लिए आवश्यक है कि उसके मूल्य में उतार–चढ़ाव न हो क्योंकि मुद्रा के मूल्यों में उच्चावन होने पर मुद्रा के मूल्य में भी परिवर्तन होगा।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक)

अथवा

रिजर्व बैंक के कार्य निम्न है–

(1) नोट निर्गमन :– रिजर्व बैंक को नोट निर्गमन का एकाधिकार प्राप्त है। यह बैंक 2 रुपये से 1000 रुपये तक के नोट निर्गमित कर सकती है जिसके लिए न्यूनतम कोष पद्धति को अपनाया गया है। रिजर्व बैंक के पास कम से कम 200 करोड़ रुपये का अंश होना चाहिए, जिसमें से 115 करोड़ रुपये का स्वर्ण एवं शेष राशि विदेशी प्रतिभूतियों में हो सकती है।

(2) साख नियमन :– रिजर्व बैंक द्वारा साख का नियमन बैंक दर, खुले बाजर की क्रियाएं, नकद कोषों के अनुपात में परिवर्तन, बिल बाजार आदि के माध्यम से किया जाता है।

(3) सरकारी बैंकर, प्रतिनिधि एवं सलाहकार :– रिजर्व बैंक सरकारों की समस्त आय अपने पास जमा करता है, व्ययों का भुगतान करता है एवं ऋण की व्यवस्था करता है। पंचवर्षीय योजनाओं के वित्तीय पहलुओं पर सरकार को सलाह देता है।

(4) विदेशी विनियम दर का नियमन :– इसके लिए रिजर्व बैंक रुपये की बाह्य दर को बनाये रखने का कार्य करना है। विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों के लिए विनियम की व्यवस्था करना है।

(5) बैंकों का बैंक :– रिजर्व बैंक कोई भी नई बैंक खोलने एवं पुरानी बैंक बंद करने की अनुमति देता हैं। बैंकों के बिलों को भुनाता है। बैंकों का निरीक्षण करता है, आवश्यकता पड़ने पर उन्हें ऋण देता है।

(6) समाशोधन कार्य :– मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, बैंगलोर, नागपूर, पटना, हैदराबाद, नईदिल्ली आदि के समाशोधन गृहों की व्यवस्था रिजर्व बैंक स्वयं करता है एवं अन्य की व्यवस्था भारतीय स्टेट बैंक करता है।

(प्रत्येक सही बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक)

उत्तर 21. फिशर के आदर्श निर्देशांक की गणना –

वस्तु	2010		2011		p_1q_0	p_1q_1	p_0q_1	p_0q_0
	P_0	q_0	p_1	q_1				
A	4	5	2	2	10	4	8	20
B	6	10	18	2	180	36	12	60
C	8	50	20	40	100	800	320	400
योग					**290**	**840**	**340**	**480**

फिशर का आदर्श निर्देशांक –

$$P01 = \sqrt{\frac{Ep1q0}{Ep0q0} \times \frac{Ep1q1}{Ep0q1}} \times 100$$

$$= \sqrt{\frac{290}{480} \times \frac{840}{340}} \times 100$$

$$= \sqrt{\frac{243600}{163200}} \times 100$$

$$= \sqrt{1.490} \times 100$$

$$= 1.2 \times 100$$

$$= 120$$

अथवा

X	Y	X-Y=D	D^2
5	4	+1	1
2	1	+1	1
9	7	+2	4
7	8	-1	1
1	2	-1	1
6	5	+1	1
4	6	-2	4
10	10	0	0
8	3	+5	25
3	9	-6	36
N = 10		$\sum D = 0$	$\sum D^2 = 74$

प्रमाप विचलन –

$$r = 1 - \frac{6\sum D2}{N(N2 - 1)}$$

$$r = 1 - \frac{6 \times 74}{10(10)2 - 1}$$

$$r = 1 - \frac{444}{990} = \frac{990 - 400}{990}$$

$$r = 1 - \frac{546}{990}$$

$$r = 0.55$$

– – – – –